वटुक पूजा

(संशोधित)



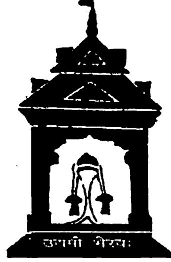
यत्र सोऽस्तमयेति विवस्वँ
श्चन्द्रमा - प्रभृतिभिः सह सर्वैः
कापि स विजयेत शिवरात्रि
स्वप्रभाप्रसर भास्वररूपा।।

Where the sun along with the moon and other luminious bodies fades away, blessed is that indescribable self luminious night of Shiva

SATISAR FOUNDATION
170, Lane-3, Priya Darshani Lane
Talab Tillo, Jammu - 180 002.
E-Mail : satisar2000@yahoo.com
Visit us at - www.satisar.org.
Ph : 0191-2502839

SATISAR FOUNDATION

(CAMP JAMMU)



नौदेहेन सती देवी भूर्मिभवति पार्थिव। तस्मा तु भूमौ सरस्तु विमलोदकम्। षड्योजनायतं रम्यं तदर्धेन च विस्तृतम।

सतोदेशमिति ख्यात देवाक्रीडं मनोहरम्.

The goddess SATI, with the body in the form of the boat, becomes the earth and on that earth comes into being a lake of clear water, known as SATIDESA .....A Sporting place of Gods.

क: प्रजापतिरूद्दिदष्ट: कश्यपश्च प्रजापति:।

तेनेदं निर्मत देशं कश्मीराख्य्र भविष्यति।।

Prajapati is called Ka, Kashyapa is also a Prajapati,

Built by him. This place will be called "Kashmir".

SATISAR FOUNDATION

170, Lane-3, Priya Darshani Lane
Talab Tillo Jammu - 180 002. Ph : 0191-2502839
E-Mail : satisar2000@yahoo.com
Visit us at - www.satisar.org.

मूल्य : इस सामग्री का सदोपयोग एवं कशमीरी पंडित संस्कृति का प्रचार व प्रसार

शिवरात्रि पूजा सामग्री

1. यज्ञोपवीत सूत्र
2. अखरोट
3. चूना (ब्रह्मकलश डालने के लिए)
4. दर्भ (विषटुर इतियादि हेतू)
5. धूप
6. तेल (चोंग हेतू)
7. रूई (चोंग व रत्नदीप हेतू)
8. फूल
9. चावल (ज़ग व अर्घ हेतु)
10. पानी
11. सिंदूर
12. तिल
13. दूध
14. दहीं
15. शक्कर
16. बबरी काठ
17. केसर
18. सर्वोषधि
19. लायऽ
20. घी
21. जौव
22. बेरं (ब्रेयि)
23. सर्षफ
24. रत्नदीप
25. शीशा (आईना)
26. फूलों से निर्मित छत्र
27. कन्द
28. नारियल
29. तामबूल (थोड़ा सी ईलाची, रोंग, नाबद)
30. पवित्र (दर्भ से बनी अंगूठी)
31. घास से बनी आरी और वुसऽर
32. नारिबंध

विश्वदेव के लिए कुछ अतिरिक्त सामग्री

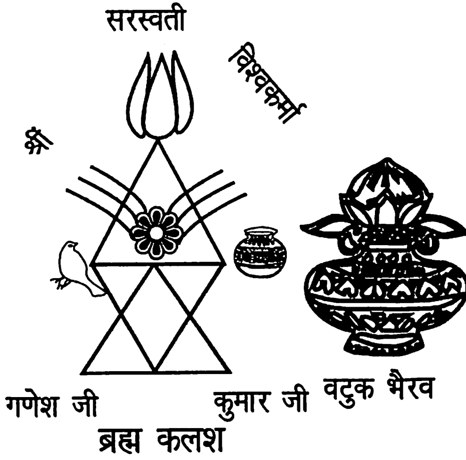
1. अग्नि के लिए थोड़ी सी लकड़ी
2. चावल का आटा (च़ोच़वोर हेतु)
3. थोडा शहद
4. फलफूल (मूली वगैरा)

श्री वटुक देव मण्डप

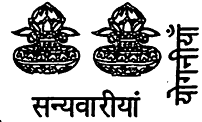
पूर्व दिशा



चोंग



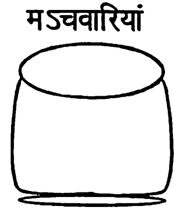
ब्रह्म कलश



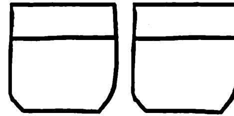
सन्यवारीयां



मऽचवारियां



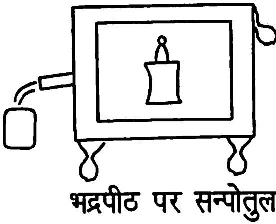
डुलू



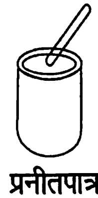
ऋषि डुल्जी

दक्षिण दिशा

धूप जूर



भद्रपीठ पर सन्पोतुल



प्रनीतपात्र



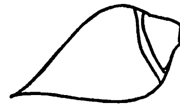
रत्नदीप



धूप



गंटा



शंख

कलश के घडे मे थोडे अखरोट रखे

HAR RATRI (हरात्रि)

MESSAGE

The Culture is alive by the activities of those who claim its possession. Infact, culture, which is assimilation, a sum up of physical and mental behaviours of present and past, is a result of evolution influenced by every thing a human being can conceive.

So, it is imperative for the people holding its allegiance to safeguard it from any onslaught and preserve its identity. Thus when we talk of culture, we must be sensitive to the essence of the basic elements that it is composed of. The traditions, dress codes, rituals, rites, music, language, food and ethics are therefore most significant factors.

For centuries Kashmir has remained an eminent seat of learning and its contribution in terms of Shaiva, Shaakta, Tantra etc. is unique which has rightly been regarded as supreme wisdom of Kashmiri Pandits. Shivarati is festival celebrated in every nook & corner of the country, but for Kashmiri Pandits this is a month long cultural activity which provides opportunity and occasion for get together and upliftment of self and society. Among K.P's this is known as HEARTH a phonetic derivation of Har-Ratri the night of Hara. Synonium of Shiva. K.P's have an idiginous and traditional way of celebrating this festival. It is more than a festival of feast and festivity, apart from its religious and spiritual aspect. The festival falls on 12th or 13th day of the dark half of phalgun month.

The activity starts from the very first day of the fortnight i.e. Hara-Aukdoh, then comes Hara-Asthami (the auspicious day of mother goddess followed by tathal Nawmi, Dyara-dahum, Gade Kaah, 12th day is celebrated as Wagur-Bhah followed by the main Puja of Herath-Truwah i.e. the auspicious day on which the entire family of **Watuk Dev** along with other Bairavas is worshipped. The eldest member of the family offers Puja and observes fast. The Puja is popularly known as Watuk-Puja of Watuk Bairav.

(भरण) Bha - i.e. Bharan or maintenance

(रवण) Ra - ie. Ravana or withdrawal of this universe

(वमण) Va - i.e. Vaman or projection or manifestation of this universe

Thus Bhairava indicates all the three aspect of Lord Shiva. We all adhore the culture that we belong to, in fact we owe our identity to it, it is so dear to us that even after being cut from the roots, we have been able to preserve this prized possession, however due to the discontinuity of the Purohit tradition and the lack

of sharing and nurturing this responsibility..., in near future may prove disastrous for its very survival, unless timely measures are taken. The sole purpose of bringing out this Puja is aimed at creating an awareness and interest in this study of the basics of our culture. The perimeters may differ, intellectual depths may vary, but when objectives are defined, all efforts would lead towards betterment.

Let us make a humble beginning.

Entire Satisar Parivar is thankful and indebted to those scholars and researchers, with whose efforts it was made possible for us to bring out this Watuk Puja.

SATISAR PARIVAR
170, Lane-3, Priya Darshani Lane
Talab Tillo Jammu - 180 002. Ph : 0191-2502839
E-Mail : satisar2000@yahoo.com
Visit us at - www.satisar.org.

Price :- Right usage of this material and promotion & propagation of KP culture.

मया सर्वे खयति र्सवदो व्यापकोऽखिले
इति भैरवशब्दस्य सन्ततोच्चारणाच्छिव :

Bhairava is one who with his luminous consciousness makes everything resound or who being of luminous consciousness joined with Kriyashakti comprehends the whole universe, who gives everything, who pervades the entire cosmos. Therefore by reciting the word Bhairava incessantly one becomes "**Shiva**".

So, when the worshipper is fully convinced that the question of bondage or liberation arises only for the psycho-physical self, not for meta-physical self, he rises above the **Vikalpas (विकल्प)** of the psycho-physical self and is immersed in the nature of Bhairava.

(Abinav Gupta)

शिवरात्रि विज्ञान

मनुष्य सृष्टि के आरंभ में महादेव ने अपनी परमाशक्ति का ध्यान किया तो देखा कि वह अपने उत्पन्न की हुई अनेक देवियों (योगिनियों) के साथ मनुष्य जीवन के लिए उपयोगी नाना प्रकार के पधार्थो को उत्पन्न करने में लगी है! महादेव ने पंचमुख, अष्टादशभुजयुक्त और 15 नेत्रों वाला स्वच्छन्द भैरव का रूप धारण किया था। इस रूप को देखकर योगिनियाँ सहम गई, तो परमाशक्ति महामाया ने क्रोध में आकर एक जलकुँभ (कशमीरी नोट्ट) पर दृष्टि डाली उस में से वटुक भैरव आयुधों सहित निकल आया। वटुक राज को महादेव के निवारण में असमर्थ जानकर महामाया ने एक और जलकुँभ (गड्डे) पर दृष्टि डाली, तो उस में से एक और गण (राम) उत्पन्न हुआ इन में से (वटुक) रजोगुण मूर्ति और गर्वित था (राम या रमण) सत्व गुण मूर्ति था यह सब गण स्वच्छन्दनाथ शिव पर आक्रमण करने के लिए उद्यत हुए, परन्तु शिव अन्तर्ध्यान हुए, तो परमाशक्ति के पास सब गण आ गये। देवी ने वटुक और राम को वरदान दिया कि :-

यस्मान्मद्युप्टिसंभूतो, वटुकरूपः प्रतापवान।
तस्मात्त्वं वटुको नाम पुत्र लोके भावेप्यसि।।

कामप्रदाता सर्वेषां, पालको वै भविष्यसि।
कामायां पूजनान्नित्यं, गणः सार्ध च पुत्रकः।।

पूजयेद्यो महेशानं, देवीपुत्रं च बालकम।
फाल्गुणासितकामायाँ, सर्वसिद्धिवाप्नुयात्।।

वटोर्दत्वा परं देवी, पुनारमणमब्रवीत्।
शुभदृष्टया परं पुत्र, प्रादुर्भूतोसि मे यतः।।

रमणो दिव्यरूपश्च, राम इत्दारतयदा भव।
वटुकानन्तरं पूजां, प्राप्स्यये सुरसुन्दर।।

रज्यन्ते महसि दिव्ये, यत्र ते योगिनां गणः।
तस्माद्रामो नाम्ना वै, पुत्र लोकं भविष्यसि।।

तस्मात्व वटुकश्चापि, मदाज्ञाधाणिवुभौ।
सर्वसिद्धिप्रदौ लोके, मद्गणा नामधीरवरौ...इत्यादि।।

अर्थात :- तुम मेरी दृष्टि से वटु (ब्रह्मचारी) रूप में पैदा हुए हो इस लिए तेरा नाम वटुक होगा। त्रयोदशी के दिन सब गणों के साथ तेरी पूजा जो

करे उस के अभिलाषों को तू सिद्ध करेगा। जो यह पूजा फाल्गुण कृष्णपक्ष त्रयोदशी को करे वह सब सिद्धियो को प्राप्त करेगा। यह कहकर भगवती राम (रमण) से बोली हे पुत्रः तुम मेरी शुभ दृष्टि से उत्पन्न हुए हो, तेरा रूप दिव्य है, तुझे देख कर मन प्रसन्न होता है तेरा नाम "राम" होगा क्योंकि तेरे दिव्य तेज़ में योगी रमण करते है तू वटुक के बाद पूजा प्राप्त करेगा वटुक और तुम मेरे सब गणो के अधिपति हो, तुम मेरी आज्ञा का धारण करने वाले हो, तुम्हारी पूजा से सब आपदाएँ दूर होगी, और सब प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होगी।

इस प्रकार का वरदान देकर योगिनियों से भगवती ने कहा कि यह जो सब पदार्थ तुमने बनाये है वह इन गणों को अर्पण करो भगवती की आज्ञा से उन्होनें वैसा ही किया। इसी दिन प्रदोष काल में भगवान् महादेव एक भयानक ज्वालालिंग में प्रकट हुए, उसे देख भयभीत हो कर सब गण वटुक और रमण के शरण में आये। वटुक और रमण ने गणों को आश्वासन दिया और इस ज्यौतिलिङ्ग का आदि और अंत देखने के लिए वटुक ऊपर को गया, तथा रमण नीचे की ओर गया, परन्तु किसी ने भी आदि या अन्त न पाया योगिनियाँ परमाशक्ति मे लीन हो गई तथा परमाशक्ति इस ज्वालालिगं मे लीन हुई वटुक, रमण या राम शान्त होकर उस ज्वालालिंग के पास जड की भांति आ पडे, और उस की स्तुति करने लगे इस दिन फाल्गुण - कृष्णपक्ष - त्रयोदशी थी इसी दिन शिव ज्वाला रूप में प्रकट हुए और अर्धरात्रि के पश्चात् शान्त होने लगे।

प्रदोष काल में ज्वालालिङ्ग के प्रकट होने से कई लोगों ने प्रदोष काल को पूजा का काल माना परन्तु कई लोगो ने प्रदोष काल में महादेव की ज्वालामूर्ति भयानक होने से उस काल को पूजा काल नही माना परन्तु अर्धरात्रि को माना है क्योंकि उस समय महादेव का ज्वालारूप शान्त होने लगा था। इसी कारण से कभी-कभी दो शिवरात्रियाँ मनाई जाती है।

साधक जनों से अनुरोध है कि बिना कारण किसी परम्परा का त्याग न करें और अपने कुल रीतियों और अनुभवों को जानने और समझने का प्रयत्न करे क्योंकि इन परम्पराओं का आधार बडा ही गूढ और सदृढ हो सकता है जोकि साधक के हित में ही हों सकता है ।

सतीसर परिवार

सर्वप्रथम नया यज्ञोपवीत गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हुई धो लें फिर दोनों अंगूठों में पकड कर पढें:-

"यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापर्ते-यत्-सहजं-पुर-स्तात् आयुश्यम् अग्रयं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेज":- ...

फिर "यज्ञोपवीतम असि यज्ञस्यत्वा उपवीतेन उपनहयामि" पढ़ कर धारण करें।

श्री वटुक भैरवाय नमः

कुलाकुलपदे यौऽसौ पालको भूतविग्रहः।
चिदानन्दरस पूर्ण वन्दे वटुकभैरवम्।।

पूजक सर्व प्रथम पूर्व दिशा की तरफ श्री वटुक भैरव को पूर्ण रूप से सजावे, ईशान कोण (अपने बायें तरफ के उपरले कोण) पर 'ब्रह्म कलश' चूने से बनावे, उसके अष्टदल कमल पर कलश-पात्र को रखे, जिस में दर्भ का बनाया हुआ विष्टऽर हो, पात्र जल से भरा हो, और अखरोटों से युक्त हो। (जैसा कि संलग्न चित्र पर स्पष्ट है।)

इस प्रकार वटुक भैरव की सारी सामग्री को अपने अपने स्थान पर रख कर धूप और दीप जलावें, और अब पूजा आरम्भ करें :

सर्व प्रथम दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करें, चावल और फूल कलश पर चढ़ाते जाये और पढ़ते जायें :-

ॐकारो यस्य मूलं क्रमपदजठरच्छन्द विस्तीर्णशाखा,
ऋृक्पत्रं सामपुष्पं यजुरचितफलः स्यादथर्वः प्रतिष्ठा।।
यज्ञच्छाया सुशीतो द्विजगणमधुपैः गीयते यस्य नित्यं,
शक्तिः सन्ध्या त्रिकालं दुरितभयहरः पातुर्नो वेदवृक्षः।।

मुक्ताविद्रु महेमनीलधवलच्छायैः मुखेस्त्रीक्षणैः
युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्वात्मवर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयाङ्कुशकरां शूलं कपालं गुणं
शङ्खचक्र मथारबिन्द युगलं हस्तैः वहन्तीं भजे।।
आयातु वरदा देवी त्र्यक्षरा ब्रह्मवादिनी।
गायत्री च्छन्दसां मातः ब्रह्मयोने नमोस्तुते।।

भद्रं पश्येम प्रचरेम भद्रं भद्रं वदेम शृणुयाम भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः प्रथिवी रुतद्यौः।।
तद्विष्णोः परमंपदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुः
राततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोः यत्
परमं पदम्।

उँों गायत्र्यै नमः ॐ भू भुर्वः स्वः तत्सक्तिुः वरेणयम्
भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ।।३।।

अब क्षेत्रपालों को जो वहां दो 'सन्यवारियां' हैं, उन्हें केवल चावल ड़ालते हुए पढ़ते जाये।

रात्रीं प्रपद्ये जननीं सर्वभूतनिवेशनीम
भद्रा भगवतीं कृष्णां विश्वस्य जगतो निशाम्।
संवेशिन संयमिनीं ग्रहनक्षत्र मालिनीं
प्रपन्नोहं शिवां रांत्री भद्रे पारमशीमहि नमः।।
कालरात्र्यै नमः, तालरात्र्यै नमः, राज्ञिरात्र्यै नमः,
शिवरात्र्यै नमः, तेजाय नमः, चण्ड़ाय नमः,
समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः।

अब प्रणीतपात्र (अर्ध्य) या किसी भी छोटे पात्र में, चावल, पानी, तिलक ओर विष्टऽर नीचे लिखित ३ मन्त्रों से ३ बार फूल ड़ालते जाइये:

१. संव्या सृजामि हृदय संसृष्टं मनो अस्तु वः।
२. संसृष्टा स्तन्वः सन्तु वः ससृष्टाः प्राणो अस्तु वः।
३. संय्यावः प्रिया स्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रिया स्तन्वो मम।।

अब इसी पात्र के विष्टऽर से इसी पात्र का जल कलश और क्षेत्र-पालों पर छिडकते हुए पढ़ते रहना।

१. अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव।

२. मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दतां तेन जीव।

३. बृहस्पतेः प्राणःस्ते प्राणन्दत्तां तेन जीव।।

(इसे जीवादान कहते है)

जीवादान देकर नीचे लिखित शुभ नामों से कलश देव पर 'तिलक लगाते ओर पुष्प चढ़ाते पढ़िये :-

महा-गणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे, द्वार्देताभ्यः प्रजापतये, ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, समाल-भनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

अब क्षेत्रपालों पर भी नीचे लिखे शुभ नामों से तिलक ओर फूल चढ़ाये :-

कालरान्यै, तालरान्यै, राझिरान्यै, शिवरान्यै, तेजाय, चण्डाय, समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यः, समालभनं गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः

इस के अन्त में 'तिल-चावल-दही ओर शक्कर' सब एक करके कलश के सामने रखिये, इसी को कलश का नैवेद्य मानकर समर्पण करें, अपना हाथ नैवेद्य के साथ लगाते हुए पढ़िये :-

सावित्राणि, सावित्रस्य, देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोः बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां आदधे। महा-गणपतये कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्ति साहिताह चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय, प्रजापतये ब्रह्माणे, कलश देवताभ्यः।

काललान्यै, तालरान्यै, रझिरान्यै, शिवरान्यै तेजाय, चण्डाय, समस्त क्षेत्रपाल देवताभ्यः, तिल तण्डुल मात्रं दधि मधु मिश्रं ॐ नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः।।

अन्त में निम्नलिखित वेद ऋृचा से कलश और क्षेत्रपालों पर पुष्प वृष्टि करते रहिए :-

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवी द्या मुत मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(कलश पूजा समाप्त)

----ooo----

अथ वटुक पूजा विधिः

पूजक सर्वप्रथम पूजा सामग्री को यथास्थान रखकर बीच में भद्रपीठ पर 'सन्य-पुतलू' अथवा शिव-मूर्ति को सथापित करें, फिर विष्टर वाले पात्र से निर्माल्य पात्र में यह पढ़ते हुए पानी डालते जाइये :-

अस्य श्री आसन-शोधन-मन्त्रस्य, मेरु-पृष्ट-ऋृषि।
सुतलं-छन्दः कूर्मो-देवता, आसन शोधने विनियोगः।।

१. मेरु पृष्ट ऋषये नमः शिरसि
दोनों हाथों से सिर का स्पर्श करें

२. सुतलंच्छन्दसे नमः मुखे
दोनो हाथों से मुँह का स्पर्श करें

३. कूर्मो देवतायै नमः हृदि
दोनो हाथो से हृदय का स्पर्श करें

४. आसन शोधने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गषु
दोनों हाथो से सब अंगों का स्पर्श करें

अब भूमि की पूजा निमित दर्भ क दो काण्ड (तिनके) आसन बिछाने के लिए भूमि पर रखे, साथ ही यह पढ़ते जाइयेः-

ध्रुवाद्यौः ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वताइमे।
ध्रुवं विश्वमिदं जगत् ध्रुवो राजा विशामसि।।

अब भूमि को तिलक और फूल लगाते पढ़िये :-
प्रीं पृथिव्ये आधार शक्त्यै समालभनं गन्धो नमः
अर्घोनमः पुष्पं नमः।।

दोनों हाथ जोड़कर मातृभूमि से प्रार्थना निमित नमस्कार करें ओर पढ़िये :-

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

अब वटुक भैरव का मन में ध्यान कीजिये, और दोनों हाथ जोड़ के यह श्लोक पढ़ते जाइये :-

१. शुक्लाम्बरधरं विष्णु शशिवर्ण चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये

अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः।।

२. नाथं नाथं त्रिभुवननाथं भूतिसित त्रिनयनं त्रिशूलधरम्।
उपवीतीकृतभोगिन-मिन्दुकला शेखरं वन्दे।।

३. गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः साक्षात् महेश्वरः।
गुरवे जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

गुरूरवे नमः, परम गुरवे नमः परमेष्टिने गुरवे नमः।
परमाचार्य नमः, आद्य सिद्धभ्यो नमः।।

अब अपनी शुद्धि के लिए पूजक इस प्रकार न्यास करें:-

ॐ - अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
हाथों की सब अंगुलियों से अंगूठे का स्पर्श करें।

न – तर्जनीभ्यां नमः

अंगूठे से हाथ की दूसरी उंगली का स्पर्श करें।

मः – मध्यमाभ्यां नमः

अंगूठे से हाथ की बीच वाली उंगली का स्पर्श करें।

शि – अनमिकाभ्यां नमः

अंगूठे से हाथ की चौथी उंगली का स्पर्श करें।

वा – कनिष्टिकाभ्यां नमः

अंगूठे से हाथ की सब से छोटी उंगली का स्पर्श करें

य – करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

दोनों हाथों से दोनो हाथों को आगे पीछे स्पर्श करें।

इसे करन्यास (हाथों की शुद्धि) कहते हैं।

अब षडङ्ग न्यास (सब अंगों की शुद्धि) इस प्रकार कीजियें।

ॐ – हृदयाय नमः *दोनों हाथों से हृदय का स्पर्श करें।*

न – शिरसि स्वाहा " *सिर का* "

मः – शिखायै वौषट् " *शिखा का* "

शि – कवचाय हूं " *कान की लवों का* "

वा – नेत्रत्राय वौषट् " *आंखों का* "

य – अस्त्राय फट् " चुटकियों का बजावे।

इसी प्रकार शरीर की शुद्धि करके पूजा–मण्ड़प के चारों ओर विघ्न करने–वाले सारे भूत–प्रेतादिकों को दूर और नष्ट करने के लिए अपने दोनों कन्धों के उपर से तिल फेंकते हुए यह पढ़िये :

अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भूवि सस्थिताः।
ये भूताः विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अब पूजक अपने मुख और पैरों पर यह मन्त्र पढ़कर जल छिडकें:–

तीर्थेस्नेयं-तीर्थमेव समानानां भवति, मानः शस्योऽरुरुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।।

दायें हाथ की अनामिका (चौथी उंगली) में पवित्र धारण करते हुए पढ़िये : - (पवित्र-दर्भ से निर्मित मुद्रिका)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधार-मयक्ष्मा वः प्रजाया स सृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति।

अपने आप को पूजक तिलक और पुष्प लगाते पढ़ेः-

सवात्मने शिवस्वरूपाय समालभनं गन्धोनमः
अर्घो नमः पुष्पं नमः।

दीये को तिलक और फूल लगाते पढ़िये :-

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतास्तिमिरापहः।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोऽयं परिकल्पितः।।

धूप को तिलक और फूल लगाते पढ़िये :-

वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ़यो गन्धवत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।।

सूर्य भगवान का ध्यान करते हुए उसी की ओर तिलक और फूल लगाते पढ़िये :

नमोधर्मनिधानाय नमः स्वकृत साक्षिणे।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमोनमः।।

निर्माल्य पात्र में अर्ध्य या (किसी पात्र) से तिलक-मिश्रित पानी ड़ालते हुए पढ़िये :-

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्व।
नज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।।

स्वात्मने शिव स्वरूपाय दीप धूप संकल्पात् सिद्धिरस्तु दीपो नमः धूपो नमः।

ॐ तत्सत् ब्रह्मअधतावत् तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ त्रयोदश्यां (दिन का नाम लेना) वासरान्वितायां महागणपतये, कुमाराय श्रियै, सरस्वत्यै, लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्ति सहिताय चक्रिणे, क्रिया सहिताय गोविन्दाय कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै,

पूर्वे	=	देवी पुत्र वटुक नाथाय	अग्नेये	=	भूत बलेम्य,
दक्षिणे	=	अग्नि वेताल राजाय	नैऋर्तये	=	बहुखातकेश्वराय
पश्चिमे	=	स्थान क्षेत्रपालाय	वायव्ये	=	मंगल राजाय
उत्तरे	=	योगिनी बलेम्यः	ईशाने	=	विश्वक् सेनाय
पाताले	=	तेजाय	मध्ये	=	चण्ड़ाय

समस्त शिवरात्री देवताभ्यः शिवरात्रीव्रत निमितं दीप धूपात्संकल्प सिद्धिरस्तु दीपोनमः धूपोनमः।।

अपसव्येन = यज्ञोपवीत को बाएँ बाजू में पहन कर अपने सारे पितरों को जल देवे।

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमो धर्माय विष्णवे।
नमो यमाय रूद्राय कान्तारपतये नमः।।

तत् सत् ब्रह्म (मास-पक्ष-तिथि और वार का नाम लेकर)

१. पित्रे पिता	२. पितामहाय दादा	३. प्रपितामहाय परदादा
१. मात्रे माता	२. पितामह्यै दादी	३. प्रपितामह्यै परदादी
१. मातामहाय नाना	२. प्रमातामहाय परनाना	३. वृद्ध प्रमातामहाय पर पर नाना
१. मातामह्यै नानी	२. प्रमातामह्यै परनानी	३. वृद्ध प्रमातामह्यै पर पर नानी

(और जितने भी सगे सम्बन्धी मरे हो
उनका गोत्र समेत नाम ले कर तपर्ण करें)

समस्त माता पितृभ्यो द्वादशदेवतेभ्यः पितृभ्यः
शिवरात्रि–व्रत निमित्तं दीपः स्वधा, धूपः स्वधा।।

सव्येन–यज्ञोपवीत को फिर दायें बाजू में पहन कर, फिर कलश पूजा की तरह यहां भी किसी पात्र में तिलक पानी विष्टऽर रख कर नीचे लिखित ३ मन्त्रों से ३ बार फूल डालियेः

१. संव्यः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः।
२. संसृष्टा तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु वः।।
३. संय्यावः प्रियाः तन्वः संप्रिया हृदयानि वः
आत्मा वो अस्तु संप्रियः संप्रियः तन्वो मम।।

अब इसके जल को इसी में रखे विष्टर से सब देवों पर छिड़काते हुए है पढ़िये :–

१. अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन् दत्तान्तेन जीव।
२. मित्रा वरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन् दत्तान् तेन जीव
३. बृहस्पतेः प्राणः सते प्राणन् दत्तान् तेन जीव

इसी प्रकार सब को ज़ीवाधान देकर पूजक अब दर्भ के २ काण्ड़ लेकर वटुक देव से पूजा करने की आज्ञा मांगता है, और निम्न लिखित मन्त्र केवल पढ़ते जाता है :–

ॐ	अङ्गुष्टाभ्यां नमः	ॐ	हृदयाय नमः
न–	तर्जनीभ्यां नमः	न –	शिरसि स्वाहा
मः	मध्यमाभ्यां नमः	मः	शिखायै वोषट्
शि–	अनामिकाभ्यां नमः	शि –	कवचाय हूँ
वा–	कनिष्टिकाभ्यां नमः	वा–	नेत्रत्राय वांषट्
य–	करतलकरपृष्टाभ्यां नमः	य–	अस्त्राय फट्

ॐ भूः पुरुषमावाहयमि नमः

ॐ भुवः पुरुषमावाहयमि नमः

ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि नमः

ॐ भूर्भूवः स्वः पुरुषमावाहयमि नमः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुः वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात्।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्राय विद्महे क्षेत्रेश मुख्याय धीमहि, तन्नः वटुक भैरवः प्रचोदयात्।।३।।

भगवतः भवस्य-देवस्य, शर्वस्य देवस्य, उग्रस्य देवस्य, महा देवस्य, पार्वतीसहितस्य परमेश्वरस्य, (कलशै) महागणपतेः कुमारस्य श्रियाः सरस्वत्याः लक्ष्माः विश्वकर्मणः द्वारदेवतानां प्रज़ापतये ब्रह्मणः कलश-देवतानां, कालरान्न्याः, तालरान्न्या, राज्ञिरान्न्यांः, शिवरान्न्याः तेज़स्य चण्डस्य समस्त क्षेत्रपाल देवतानाः शिवरात्रिव्रत निमितं कलश पूजनं, शिवरात्री पूजन मर्चामहं करिष्ये ॐ कुरुष्व।

आज्ञा लेकर सब देवताओं के लिये आसन बिछाना, आसन के निमित दर्भ के दो काण्ड़ सामने रखना और पढ़ते जाना :-

विश्वेश्वर महादेव राजराजेश्वरेश्वर।

आसनं - दिव्यमीशान दास्येहं परमेश्वर।।

भगवतः भवस्य देवस्य - इदं आसनं नमः। ब्रह्मणः कलश देवतानां - इदं आसनं नमः। तेजस्य चण्डस्य समस्त शिवरात्री देवतानां इदं आसनं नमः।।

अब पूजक हाथ में कुछ चावल के दाने और दर्भ के दो काण्ड लेकर सब का आवाहन करे और पढ़ते जाये।

भगवते भवाय देवाय, ब्राह्मणे कलशदेवताभ्यः समस्त शिवरात्री देवताभ्यः युष्मान् वः पूजयामि ॐ पूजय।

इस प्रकार आवाहन की आज्ञा लेकर तन मन से आवाहन करते और पढ़ते जाये।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योः मुखीय मामृतात्।।

भगवन्तं भवंदेवं शंर्वदेवं उग्रंदेवं महादेवं, श्री वटुक भैरवं आवाहयिष्यामि ब्रह्माणं कलशदेवताः आवाहयिष्यमि। कालरात्रीं तालरात्रीं, राक्षिरात्रीं, शिवरात्रि, तेजं, चण्डं आवाहयिष्यामि ॐ आवाहय।

अब बबरी काष्ट व सुगन्धित फूलों से सब का आवाहन करे, और पढ़ते जाये :-

१. कुलाकुलपदो योऽसौ पालको भूतविग्रहः।
चिदान्दरसपूर्ण वन्दे वटुकभैरवम्।।

२. लिङ्गद्य भक्तदयया क्षणमात्रेमेकं
स्थानं विधाय भवमद्विहितां पुरारे।
सर्वेश विश्वमयहृत् कमलाधिरूढः
पूजां गृहाण भगवन् भव मेऽद्य तुष्टः।

३. भूमेर्जलात्तु पवनादनलात् हिमांशोः
उष्णांशुतो हृदयतो गगनात् समेत्य।
लिङ्गत्र सन्मणिमये मदनुग्रहार्थं
भवत्यैकलभ्य भगवन् कुरु सन्निधानम्।।

४. आयाहि भगवन् शम्भो सर्वेश गिरजापते।
प्रसन्नो भव देवेश नमस्तुभ्यं हि शङ्कर।।

५. भगवन् पांवतीनाथ भानुग्रह कारक।

अस्मद् दयानुरोधेन सन्निधानं करु प्रभो।।

६. इत्याहूय तु गायंत्री त्रिः समुच्चार्य तत्ववित्।
मनसा चिन्तितैः द्रव्यैः देव मात्मनि पूजयेत्।।
(तेजोरूपं ततः क्षिप्त्वा प्रतिमायां पुनर्यजेत्)

अब सब देवताओं को सामने साक्षात् मानकर उनके पाऊं धोने के लिए पानी तैयार करें। किसी पात्र (प्रणीतपात्र) में (जल, केसर, सर्वौषधि, लाजा ओर दर्भ का विष्टर) सबको इस मन्त्र से एकीकरण करें :-

'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभि स्त्रवन्तुनः'
फिर यही ज़ल सब पर छिडकाते जाइये, और पढ़ते जाइए।

महादेव महेशान महानन्द परात्पर।
गृहाण पाद्यं मद्दत्तं पार्वती सहितेश्वर।।

भगवते भवाय देवाय, शर्वाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय-पाद्यं नमः। ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः पाद्यं नमः। तेजाय-चण्डाय समस्त शिरात्रि देवताभ्यः पाद्यं नमः।

बाकी बचा हुआ पानी छोडकर अब इन्ही देवताओं को अर्घ्य देवे (मुँह धोने के लिए) नया जल इसी पात्र में डाले, साथ ही दूध-दही-घी-जौ-चावल और बेर डाले, और सब को इसी उपरोक्त "शन्नो देवो" मंत्र से मिलाते रहिए, फिर यही जल सब देवों पर डालते जाईये और पढ़ते रहिए।

त्र्यम्बकेश सदाधार विपदां प्रतिघातक।
अर्घ्यं गृहाण देवेश सम्पद् सर्वार्थ साधक।।

भगवान, भवदेव, उग्रदेव. शर्वदेव. महादेव श्री वटुक इंदभैरव वोऽर्घ्यं नमः। ब्रह्मन् कलश देवताः इंद वोऽर्घ्य नमः। तेज-चण्ड़ समस्त शिवरात्रि देवताः इंद वोऽर्घ्य नमः।

अब शुद्ध जल से देवताओं को आचमन देवे और पढ़िये

त्रिपुरान्तक दीनार्तिनाश श्रीकण्सठतुष्टये।
गृहाणाचमनं देव पवित्रोदककल्पितम्।।

भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय, ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः। तेजाय-चण्डाय श्री शिवरात्रि-देवताभ्यः आचमनीयं नमः

अब सब देवताओं को स्नान कराना है, सर्वप्रथम केवल शुद्ध जल से स्नान करवाये, ओर पढ़िये :-

त्रिकाल काल कालेश संहार करणोद्यत।
स्नानं तीर्थाहृतैः तोयैः गृहाण परमेश्वर।।

भगवते भवादेवाय। पार्वतीसहिताय परमेश्वराय श्री वटुक भैरवाय। ब्रह्मणे कलश देवताभयः। तेजाय चण्डाय समस्त शिरात्री देवताभ्यः मन्त्रस्नानीयं नमः

अब देवताओ को पञ्चदश स्नान करना है, इसके लिए किसी बडे पात्र में जल रखे, और उस में दूध-दही-घी तिल-चावल-पुष्प-धूप भस्म- सर्षप और बेर आदि डाले, अब इसी जल को प्रणीतपात्र (अर्घ्य) या किसी छोटे पात्र से वटुक-भैरव, रामगडू और सन्य-पुतलू या शिव मूर्ति पर डालते जाइये, और यह पढ़ते रहिए (सम्भव हो, बायें हाथ से घण्टा बजाते रहिए, और दायें हाथ से स्नान जल डालते जाइये।)

१. असंख्यातः सहस्राणि ये रुद्राः अधि भूम्याम्।
तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

२. येस्मिन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवाअधि।। तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

३. ये नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्रा उपश्रिताः ।। तेषां सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

४. ये नीलग्रीवा शितिकण्ठाः शर्वा अधः क्षमाचराः।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

५. ये वनेषु शिष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

६. येऽन्नेषु विविध्यन्ति मात्रेषु पिवतो ज़नान्।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

७. ये भूताना मधिपतयो विशिखासः कपार्दिनः।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

८. ये पथीनां पथिरक्षय ऐडमृडायव्युधः।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

९. ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषङ्ग णः।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

१०. य एतावन्तो वा भूयांसो वा दिशो रुद्रा वितिष्ठिरे।। तेषां सहस्त्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।

११. ॐनमो अस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्ष मिषव स्तेभ्यो दशा प्राची दर्शदक्षिणा दर्श प्रतीची दशोदीची र्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।

ॐ नमो अस्तु रुद्रोभ्यो ये अन्तरिक्षे येषां वात मिषव स्तेभ्यो दशा प्राची दर्शदक्षिणा दर्श प्रतीची दशोदीची र्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।

ॐ नमो अस्तु रुदेभ्यों ये पृथिव्यां येषामन्न मिषव स्तेभ्यो। दशा प्राची दर्शदक्षिणा दर्श प्रतीची दशोदीची र्दशोर्ध्वा स्तेभ्यो नमो अस्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चनो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।

१. यो रुद्रो अग्नौ योऽप्सु य ओषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवनाविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवाः।

२. अघोरभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च।
सर्वथा शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्र रूपेभ्यः।।

नोट :- यदि समय आज्ञा देता हो, तो सम्पूर्ण रुद्रमन्त्र और चमानु-वाक से वटुक भैरव को स्नान देवे।

अन्त में:-

भगवते भवायदेवाय, शर्वायदेवाय, रुद्रायदेवाय, पशुपते देवाय उग्रायदेवाय, भीमायदेवाय, महादेवाय, ईशानदेवाय, पार्वतीसहि-तायपरमेश्वराय श्री वटुक-भैरवाय पञ्चदश स्नानानि नमः महागणपते, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै, ब्राह्मणे कलश देवताभ्यः (फाल्गुणे) शक्तिसहिताय चक्रिणे, क्रियासहिताय गोविन्दाय स्नानानि नमः। कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै।

पूर्वे	-	देवी-पुत्र वटुक नाथाय			
आग्नेये	-	भूत बलेभ्यः	उत्तरे	-	योगिनीबलेभ्यः।
दक्षिणे	-	वेताल राजाय	ईशाने	-	विश्वक् सेनाय
नैऋृर्तये	-	बहुखातकेश्वराय	ऊर्ध्वे	-	जयक् सेनाय
पश्चिमे	-	स्थान क्षेत्रपालाय	पाताले	-	तेज़ाय
वायव्ये	-	मंगल राजाय	मध्ये	-	चण्डाय,

समस्त शिवरात्रि देवताभ्य :स्नानानि नमः ।।

सबको स्नान करनें के पश्चात् जल से भरा प्रणीत पात्र (अर्घ्य) वटुक देव पर ॐनमो देवेभ्यः यह पढ़कर चढ़ावे।

कण्ठोपवीती

फिर गले में सीधा ओर दोनों अंगूठे में यज्ञोपवीत धारण कर एक और जल से भरा प्रणीतपात्र (अर्घ्य) स्वाहा-ऋृषिभ्यः कहकर 'वटुक देव पर' चढ़ावे।

अपसव्येन

तदननतर बाऐ-बाजूं में यज्ञोपवीत धारण कर एक और जल से भरा प्रणीत पात्र वधापितृभ्यः पढ़ कर वटुक देव पर चढ़ावे

सव्येन

अन्त में फिर दायें बाजूं में यज्ञोपवीत धारण कर तीन बार जल से भरा प्रणीत पात्र यह कहकर श्री वटुक भैरव पर चढ़ावे।

आ ब्रह्मास्तम्बपर्यन्तं ब्रह्माणडं स चराचरं
जगत् तृप्यतु तृप्यतु - तृप्यतु - एवमस्तु।।

सब के बाद फिर वटुक देव (सन्य पुतलू) पर प्रणीत पात्र से (स्नान द्रव्यों का मैल मिटाने के लिए) तीन बार यह पढ़ते पढ़ते शुद्ध जल चढावें।

ॐनमः शिवाय वरदाय वटुक भैरवाय सदा शिवाय।।३।।
शिवरात्रि देवताभ्यः मन्त्रगुढकं परिकल्पयामि नमः।।

इसके अनन्तर भूतों और प्रेतों के निवारण के लिए पूजक अपनी बायीं हाथ के हथेली में थोडे से चावल और पानी रख कर सब देवताओं के उपर २ से आरात्रिका (आलत) निकाल कर अपने बायें कन्धे से दूर फेके। साथ ही यह पढ़ते जाइये।

गृह्नन्तु भगवद् भक्ता भूताः प्रासाद बाह्यागाः
पञ्च भूताश्च ये भूता स्तेषामनुचराश्चये।
ते तृप्यन्तु वोषट्।। शिरात्रि देवताभ्यः
आरात्रिकां परिकल्पयामि नमः।।

फिर वटुक देव के चरणों के जल अपने नेत्रों को यह पढते हुए स्पर्श करिये।

१. तेजोरुप महेशान सोमसूर्याग्निलोचन।
प्रकाशय परतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर।।

२. भगस्य हृदयं लिङ्ग लिङ्गस्य हृदयं भगः।
तस्मै ते भगलिंगाय उमा रुद्राय वै नमः।।
(शिवरात्रियाग देवताभ्यो नेत्रस्पर्शनं परिगृह्णामि नमः)

अब वटुकदेव को रखने के स्थान को विचित्र फूलों और वस्त्रों से सजाते हुए पढ़िये :-

ॐआसनाय नमः, पद्मासनाय नमः, प्रेतासनाय नमः, वृषभा-सनाय नमः, ज्ञानासनाय नमः, सिंहासनाय नमः, पीठा सनाय नमः, विचित्रवाहनासनाय नमः।।

अब वटुकदेव को दोनों हाथों से उठा कर उसे क्षमा मांगते हुए सुसज्जित स्थान पर रखिये, सुगन्धित द्रव्यों और विचित्र फूलों से उसे सजाते हुए यह पढ़िये :-

१. उत्त्ष्ठि भवन् शम्भो उत्तिष्ठ गिरजापते
उत्तिष्ठत्रिजगन्नाथ त्रैलोक्ये मंगलं कुरु।।

२. किमासनं ते वृषभासनाय, किं भूषणं वासुकि भूषाणाय।
वित्तेशभृतयाय किमस्तिदेयं, महेश किंते वचनीयमस्ति।।

यही पर यथावकाश 'महिम्नः पार और अन्य स्तोत्रादि पढ़ कर भगवान का अनुलेपन (सजावट) करते रहिए।

अथ महिम्नस्तोत्र

श्री पुष्प-दन्त उवाचः

महिम्नः पारं-ते परम-विदुषो यद्य-सदृशी
सतुरित्-ब्र्हादीनाम्-अपि तद-वसन्नाः-त्वयि गिरः।
अथा-वाच्यः सर्वः स्वमति-परिणामा-वधि गृणन्
ममा-प्येष-स्तोत्रे हर! निर्-अपवादः परिकरः (1)

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्ः-मनसयोर्-
अतत्-व्यावृत्त्या यं चकितम्-अभिधते श्रृतिर्-अपि।

स कस्य-स्तोतव्यः कतिधि-गुणः कस्य विषयः
पदे-त्व र्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः (2)

मधु-स्फीता वाचः परमम्-अमृतं निर्मिवतः
तव ब्रह्मन्-किं वाक्-अपि सुरगरो-र्विस्मय-पदम्।
मम त्वेतां वार्णीं गुण-कथन-पुण्येन भवतः
पुनामी-त्यर्थेऽस्मिन्-पुर-मथन! बुद्धि-र्व्यवसिता (3)

तवैशवर्यं-यत्-तत्-जगत्-उदय-रक्षा-प्रलय-कृत्
त्रयी-वस्तु व्यस्तं तिसृषु गुण-भिन्नसु तनुषु।
अभव्यानाम्-अस्मिन्-वरद रमणीयाम्-अरमणीम्
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः (4)

किम्-ईहः किं कायः स खुल किमुपायः-त्रिभुवनम्
किम्-आधारो धाता सृजति किम्-उपदान-इति च
अतर्क्यै-श्वर्य्ये त्व-य्यन-वसर दुःस्थो-हताधियः
कुतर्कोऽयं काश्-चित्-मुखरयति मोहाय जगतः (5)

अजन्मानो-लोकाः किम्-अवयव-वन्तोपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भव-विधिर्-अनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्यात् भुवन-जनने कः परिकरो
यतो मन्दाःत्वां प्रत्यमरवर! संशेरत इमे (6)

त्रयी सांख्यं योगः पशुमति-मतं वैष्णवम्-इति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परम्-इदम-अदः पथ्यम्-इति-च।
रुचीनां वैचित्र्यात्-ऋजु-कुटिल-नाना-पथ जुषाम्
नृणाम्-एको गम्य-स्त्वमसि पयसाम्-अर्णव इव (7)

महोक्षः खट्वाँगं परशुर्-अजिनं भस्म फणिनः
कपालं चे ते यत्-तव वरद! तन्त्रो पकरणम्
सुराःतां ताम्-ऋद्धिं दधति तु भवत्-भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मा रामं विषय-मृग-तृष्णा भ्रमयति (8)

ध्रुवं कश्चित्-सर्वं सकलम्-अपरस्त्व-ध्रुवम्-इदं

परो ध्रौव्या ध्रौव्यो जगति गदति व्यस्त-विषये।
समस्ते प्ये-तिस्मन्-पुरमथन! तै र्विस्मित इव
स्तुवन्-जिह्वमि त्वां खुल ननु धृष्टा मुखरता (9)

तवै-श्वर्यं यत्नात् यत्-उपरि विरंचि-हरिर्-अर्धः
परिच्छेत्तुं यातौ-अनलम्-अनलस्कन्ध-वपुषः।
ततो भक्ति-श्रद्धा-भर-गुरु-गृणत्-भ्यां गिरिश! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किम्-अनुवृत्ति र्न फलति (10)

अयत्नाद्-सादय त्रिभुवनम्-अवैर-व्यतिकरम्
दशास्यो यत्-बाहून-अभृत रण-कण्डू-पर-वशान्
शिरः पद्म-श्रेणि-रचित-चरणाम्भोरुह-बलेः
स्थिरायास्त्वत्-भक्तेः-त्रिपुर-हर! विस्फूर्जितम्-इदम् (11)

अमुष्य त्वत्-सेवा-सम्-अधिगत-सारं भुजवनम्
बालात्-कैलासोपि त्वत्-अधि-वसितौ विक्रम-यतः।
अलभ्यः-पाताले-प्यलस-चनितांगुष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठा-त्वयासीत्-ध्रुवम्-उपचितो मुह्यति खलः (12)

यत्-ऋद्विं सुत्राम्णो वरद! परमोचैर्-अपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजन-विधेय-त्रिभुवनः।
न तत्-चित्रं तस्मिन् वरि-वसितिर त्वत्-चरणयोः
न कस्या-प्युन्नत्यै भवति शिर-सस्त्वय्य-वनतिः (13)

आकाण्ड-ब्रह्माण्ड-क्षय-चकित-देवा-सुर-कृपा
विधेयस्यासीत्-यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रयम्-अहो
विकारोपि श्लाध्यो भुवन-भय-भंग-व्यसनिनः (14)

असिद्धार्था नैव क्वचित्-अपि सदेवा-सुर-नरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्ःईश त्वाम्-इतर-सुर-साधारणम्-अभूत
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि विशिषु पथ्यः परिभवः (15)

मही पादाघातात्-व्रजित सहसा संशयपदम्
पदं विष्णोर्-भ्राम्यत्-भुज-परिघ-रुग्ण-ग्रह-गणम्।
महुर्-द्यौर्-दौस्थ्यं यात्यनि-भृत-जटा-ताडित-तटा
जगत्-रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता (16)

वियत्-व्यापी तारागण-गुणित-फेनोत्-गम-रुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषत-लघु-दृष्टः शिरसि-ते।
जगत्-द्वीपाकारं जलधि-वलयं तेन कृतमि-
त्यनेनै-वोन्नेयं धृत-महिम दिव्य तव वपुः (17)

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिर्-अगेन्दो धनु-रथो
रथांगे चन्द्रार्कौ रथ-चरण-पाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुर-तृणम्-आडम्बर-विधिः
विधेयैः क्रीडत्यो न खलु-परतन्त्राः प्रभुधियः (18)

हरिस्ते साहस्त्रं कमल-बलिम्-आधाय पदयोः
यत्-एकोने तस्मिन्-निजम्-उदहरत्-नेत्र-कमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिम्-असौ च क्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुर-हर! जागर्ति जगताम् (19)

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधानमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसुजनः (20)

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिर्-अधीशस्तुन-भृताम्-
ऋषीणाम्-आर्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुरगणाः
कृतुभंशस्त्वतः क्रतुफल-विधान-व्यसनिनो
ध्रुवं-कर्तु' श्रद्धदा-विधुरम्-अभिचाराय हि मरवाः (21)

प्रजानाथं नाथ! प्रसभम्-अभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहित्-भूतां रिर-मयिषम्-ऋष्यस्य वपुषा
धनुष्पाणे-र्यातं दिवम्-अपि सपत्रा-कृतम्-अमुम्
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याध-रभसः (22)

अपूर्वं लावण्यं विवसन् तनोस्ते विर्मशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोप व्यतिकरः
यतो भग्ने गुह्येसकृत् अपि सपर्यां बिदधतां
ध्रुवं मोक्षोऽश्लीलं किम् अपि पुरुषार्थं प्रसबिते (23)

स्वलावण्या-शंसा-धृत-धनुषम्-अनाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुर-मथन! पुषपायुधम्-अपि!
यदि स्त्रैणं-देवी प्रम-निरत-देहार्ध-घटनात्
अवैति त्वाम्-अद्धा-वत-वरद! मुग्धा युवतयः (24)

श्मशानेष्वा-क्रीडा स्मर-हर! पिशाचाः सहचराः
चिता-भस्मा-लेपः सृक्-अपि नृकरोटी परि-करः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवम्-अखिलं
तथापि स्मर्तणां वरद! परमं मंगलम्-असि (25)

मनः प्रत्यक्-चित्ते सविधम्-अविधायात्त-मरुतः
प्रहृष्यत्-रोमाणः प्रमद-सलिलोत्-संगित-दृशः।
यदा-लोक्या-ह्लादं हृद इव निमज्ज्या-मृतमये
दध-त्यन्त-स्तत्त्वं किम्-अपि यमिनस्तत्-किल-भवान् (26)

त्वम्-अर्क-स्त्वं सोम-स्त्वम्-असि पवन स्तवं हुतवहः
त्वम्-आप-स्त्वं व्योम-त्वमु-धरणिर्-आत्मा त्वमिति च।
परि-च्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम्
न विद्मस्तत्-तत्त्वं वयमिह तु यत्-त्वं न भवसि (27)

त्रयीं तिस्त्रवृतिःभुवनम्-अथो त्रीन्-अपि सुरान्
अकाराद्यै-वर्णै-स्त्रिभिर्-अभि-दधत्तीर्ण-विकृति।
तुरीय ते धाम ध्वनिभर्-अवरुन्धानम्-अणुभिः
समस्त व्यस्तं त्वां शरणद! गृणा-त्योमिति-पदम् (28)

भवः शर्वो रुद्रः पशुपत्रिर्-अथोग्रः सह-महान्
तथा भीमेशानौ-इति यत्-अभिधाना-ष्टकम्-इदम्
अमुष्मिन प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिर्-अपि
प्रिया-यास्मैं-धाम्ने-प्रणिहित-नमस्योस्यि भवते (29)

वपुष्प्रादु-र्भावात्-अनुमितम्-इदं जन्मनि पुरा
पुरारे! नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान्।
नमन्-मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर-अहम्-अग्रे-प्यनतिमान्
महेश! क्षन्तव्यं तत्-इदम्-अपराध-द्वयम्-अपि (30)

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव! दविष्ठाय च नमः
नमः क्षोदिष्ठाय स्मर-हर! महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमः
नमः सर्वस्मै ते तत्-इदम्-इति शर्वाय च नमः (31)

बहल-रजसे विश्वो-त्पत्तै भवाय नमो नमः
प्रबल-तमसे तत्-संहारे-हराय नमोनमः।
जनसुख-कृते सत्त्वो-द्रिक्तौ मृडाय नमोनमः
प्रबल-तमसे तत् संहारे हाराय नमो नमः (32)

कृश-परिणति चेतः क्लेश-वश्यं क्वचेदम्
क्व च तव गुण-सीमो-ल्लंघिनी शश्वत्-ऋद्धिः।
इति चकितम्-अमन्दीकृत्य मां भक्तिराधात्
वरद्! चरण्योरस्ते वाक्य-पुष्पोप-हारम् (33)

असित-गिरि समं स्यात्, कजलं सिन्धुपात्रे
सुरतस्वरशाखा लेखानी पत्रमुर्वी।
लिखित यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालम्।
तदपि तव गुणानाम्-ईशं पारं न याति (34)

श्री पुष्पदन्त-मुखं-पंकज निर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विष-हरेण हर-प्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूपति-र्महेशः (35)

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमत्-शंकर-पादयोः
अर्पिता तेन देवः प्रीयतां च सदाशिवः
ॐनमः शम्भवाय च, मयोभवाय, नमः शंकराय च,
मयस्करायय नमः शिवाय च शिवतराय च

अब भगवान को वस्त्र पहन लीजिए

कालाग्निरुद्र सर्वज्ञ वरदाऽभय दायक।
वस्त्रंगृहाण देवेश दिव्य वस्त्रोपशोभित।।

(शिवरात्रि देवताभ्यः वस्त्रं परिकल्पयामि नमः)

वटुकदेव को यज्ञोपवीत पहन ले।

सुवर्णतारैः रचितं दिव्य यज्ञोपवीतकम्।
नीलकण्ठ मयादत्तं गृहाण मदनुग्रहात्।।

(शिवरात्री देवताभ्यः यज्ञोपवीतं परिकल्पयामि नमः)

अब भैरवनाथ को यह पढ़ते हुए 'तिलक' लगाइये :-

सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासन सु संस्थित।
गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्।।

भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, माहदेवाय श्री वटुक भैरावाय समालभनं गन्धोनमः। (कलशे) ब्रह्मणे कलश-देवताभ्यः समालभनं गन्धोनमः। तेजाय-चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः समालभनं गन्धोनमः।

नोट :- भैरव नाथ को स्नान कराते समय जिन जिन नामों का प्रयोग किया है, पूजक उन सारे नामों का प्रयोग अब फिर तिलक लगाने, 'नाना रंग के फूल-चढ़ाने, धूप और दीप समर्पण करने, तथा आरती उतारने के समय भी करे।।

अब पूजक भक्ति के विचित्र फूल (बिलवपत्र) चढ़ाते जाये।

सदाशिव शिवानन्द प्रधान करुणेश्वर।
पुष्पाणि बिल्पत्राणि विचित्राणि गृहाण।।

भगवते भवायदेवाय, शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय,

श्री वटुक भैरवाय सपरिवार सानुचराय अर्घोनमः पुष्पंनमः।। (कलशे) ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः अर्घोनमः पुष्पं नमः। तेजाय-चडाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः।

अब परिवार के सारे व्यक्तियों के समेत पूजक धूप-दीप समर्पण करते हुए भगवान वटुक भैरव की आरती उतारें :-

पहले धूप सर्मपण करें:-

महादेव मृडानीश जगदीश निरञ्जन।
धूपं गृहाण देवेश साज्यं गुग्गल कल्पितम्।।

भगवते भवाय देवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय धूपं परिकल्पयामि नमः तेजाय-चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः धूपं परिकल्पयामि नमः।।

अब रत्नदीप चढ़ाते पढ़िये :-
हिरण्यबाहो सेनानीरौषधौनांपते शिव।
दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिवर्तिकम्।।

भगवते भवाय, शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महादेवाय श्री वटुक भैरवाय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः (कलशे) ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः, तेजाय चण्डाय समस्त शिवरात्री देवताभ्यः श्री वटुक-भेरव देवतानां - सन्तोषणार्थं, आत्मनः शुभफलप्राप्त्यर्थं रत्नदीपं परिकल्पयामि नमः।।

अब सारे जन खड़े होकर श्री वटुक भैरव की आरती उतारें, ओर यह पढ़ते जाये :-
मयूरपुच्छैः देवेश शुभ्रैः चामरकैः तथा।
ध्वज़ं छत्रं वीजनं च गृहाण परमेश्वर।।

भगवते भवायदेवाय शर्वाय देवाय, उग्राय देवाय, महा देवाय श्री वटुक भैरवाय समस्तशिवरात्री देवताभ्यः चामरं परिकलपयामि नमः।

नोट :- पूजक सब व्यक्तियों सहितः

१.	जय सर्वजनाधीश०	शिव आरतियाँ
२.	व्याप्त चराचर भावविशेषं०	
३.	अभीषण कटु भाषणं०	
४.	जय शिव ॐकार० इत्यादि पर्डे	

अपनी भक्ति से अनुस्यूत श्री गणेश जी तथा भगवती जगदम्बा के श्लोकों से आरती उतारे। आरती करने पर फूलों का छत्र वटुक देव पर लगाये।

काराडात् काराडात् प्ररोहन्ती परुषः परुषम्परि
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।
शिवरात्री देवताभ्यः छत्रे परिकल्पयामि नमः।

अब आईना (शीशा) दिखाते हुए पढ़िये।

यस्य दर्शनमात्रणे विश्वं दर्पण बिम्बबत्।
तस्मै ते परमेशाय मकुरं कल्पयामि-अहम्।।
शिवरात्री देवताभ्यः आदर्श परिकल्पयामि।

निर्माल्य में कुछ जल डालते जाइये :-

एताभ्यो देवताभ्यो धूपदीपात् संकल्पसिद्धिरस्तु धूपोनमः दीपोनमः

अब दोनों हाथ जोड के वटुकदेव से माफी मागंना।

एतामसां शिवरात्री देवतानां मर्ध्यदानाद्यर्चन विधिः सर्वः परिपूर्णोस्तु

माफी मांगने के बाद भगवान वटुकभैरव के घडे में दूध ओर चरु (कन्द) समर्पण करते पढ़िये :-

क्षीराज्यम्धुसंमिश्रं शुभ्रदध्नासमन्वितम्।
षड्सैश्च समायुक्तं गृहाणन्नं निवेदये।।

श्री वटुक भैरवाय शिवरात्री देवताभ्यो चरुं परिकल्पयामि नमः

अब दोनों हाथों से पुष्पाञ्जलि वटुकदेव पर समर्पण करेः-

हर विश्वाखिलाधार निराधार निराश्रय।
पुष्पाञ्जलिमिमं शम्भो गृहाण वरदो भव।।

श्री वटुकदेवाय पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः

नारियल आदि फल भेंट चढ़ाते हुए पढ़िये:

राजराजाधि देवेश निराधार निरास्पद।
फलं गृहाण मद्दत्तं नारिकेलादिकं शुभम्।।

श्री वटुक देवाय फलं समर्पयामि नमः

अब ताम्बूल भेंट करते पढिये :

शाश्वतात्मन् महानन्द मदनान्तक धूर्जटे।
गृहाण पूगताम्बूल दलपत्रादि संयुतम्।।

श्री वटुक भैरव की मानसिक भाव से 'अर्धप्रदक्षिणा' करके पुष्पाञ्जलि समर्पण करे :-

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्ति शिवस्यार्ध प्रदक्षिणात्।।

ॐ नमो भैरवेश वटुक-भैरव सानुग भगवन् प्रसीद।।

इसके बाद ' ॐ नमः शिवाय' मन्त्राक्षरों से वटुकदेव पर क्षमापुष्प लगाते पढ़िये :-

न - नागेन्द्रहराय त्रिलोचनाय भस्माङ्ग रागाय महेश्वराय।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।

मः - मातङ्ग चर्माम्बरभूषणाय समस्त गीर्वाणागणचिंताय।
त्रैलोक्य नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय।।

शि – शिवामुखाम्भ्योज विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशाय
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।

वा – वसिष्टकुम्भोद्भव गौतमादि मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।

य – यज्ञवसरुपाय जटाधराय पिनाक हस्ताय सनातनाय।
नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय तस्मै यकाराय नमः
शिवाय।।

इस प्रकार पञ्चाक्षरस्तोत्र तथा अन्यान्य भक्तिभावपूर्ण स्तोत्रादि पढ़कर दोनों हाथ जोडकर अष्टाङ्ग प्रणाम करिये, और पढ़ियेः–

मृडानीशाद्य मे स्वामिन् अपराधान् अनेकशः।
क्षम स्वामिन् प्राणामं में गृहाणष्टाङ्ग संयुतम्।।

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा बचसा च नमस्कारं करोमि नमः।।

पूजा में किसी प्रकार की कहीं कमी न हुई हो, उसके लिए वटुक भैरव से हाथ जोड़ कर क्षमा मांगना।

अन्नं नमः २ आज्यं २ अद्यदिने अद्ययथा संकल्पात् सिद्धिरस्तु– अन्नहींनं–क्रियाहीनं–विधिहीनं–द्रव्यहींनं मन्त्रहीनं च यद्गतं तत्सर्व मच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु।

अब अन्त पर सपरिवार श्री वटुक देव को पहले आचमन से तृप्त कर फिर उसके साथ ही अपनी श्रद्धानुसार कुछ दक्षिणा भेंट करें :–

आचमन का जल
'शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः'
इस मन्त्र से किसी पात्र में भर ले, फिर

भगवते भवाय देवाय श्री वटुक भैरवाय अपोशानं नमः। (कलशे) ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः अपोशानं नमः तेजाय-चण्डाय समस्त देवताभ्यो अपोशानं अमः

कहकर सब पर जल डालते जाइये।

तदनन्तर फिर

'शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः' मन्त्र से किसी पात्र में जल भर लीजिये, और उसी में सब की दक्षिणा डालते पडे

"भगवते भवायदेवाय श्री वटुक भैरवाय, दक्षिणायै तिल हिरणयंरजत निष्कर्णददानि।

फिर ब्राह्मणे कलश-देवताभ्यः दक्षिणायै० तेजाय चण्डाय शिवरात्रि देवताम्यः दक्षिणायै तिल हिरणयंरजत निष्कर्ण ददनि।

इच्छानुसार यथाशक्ति दक्षिणा भेंट करें। फिर इसके साथ ही एक एक सिक्का प्रत्येक को दक्षिणा के समान-

"एता देवताः सदाक्षिणाऽनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु"

पढ़कर जल समेत सिक्का उठाकर केवल सामने सिक्का छोडे, और जल से अपने मुँह को छिडकावे।

फिर अन्त में कलश पर दो बार फूल इस मन्त्र से चढ़ावे :-

ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव-चक्षुराततम् तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धने विष्णोः यत् परमं पदम्।

नाथं नाथं त्रिभुवन नाथं भूतिसितं त्रिनयनं त्रिशूल धरम्।
उपवीतीकृतभोगिन-मिन्दुकलाशेखर वन्दे।।

करकलितकपालकुण्डलीदणडपणिः
तरुणतिमिरीलव्यालयज्ञोपवीती

क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद दक्षो
जयति वटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।

(अब सब परिवारजनों को तिलक लगायें व नारिबँध बाँधें)

नोट :- कश्मीर में कई घरानों की यह रीति है, कि वे वटुक देव का पूजन करके "वैश्वदेव विधि" से (भूमण्डल के भूतादिकों ओर अपने पितरों का अष्टाङ्ग अन्न से तृप्त करते है) फिर वटुकनाथ को नैवेद्य समर्पण करते है। उनके लिए वैश्वदेव विधि इसी पुस्तक के अन्त में संगृहीत है, अवश्य देखें।

अब प्रिय परिवार समेत अपनी अपनी कुल रीति अनुसार श्री वटुक नाथ को नैवद्य समर्पण करने की विधि इस प्रकार है :-

सर्व साधारण विधि से नैवेद्य (सब प्रकार का पकाया हुआ भोजन, चावल की रोटियां, पापड आदि) तीन थालियों में लाइये :- जिन में :

१. एक थाली – जो सारे प्रिय परिवार की ओर रखी जाती है
२. दूसरी थाली – जो समस्त शिवरात्रि देवताओ (योगिनियों) के लिए है, डुलू में जो भेंट किया जाता है, जिन पर अपनी अपनी रीति के अनुसार अन्य वस्तुएं (सप्तसस्य आदि भी) रखी जाती हैं।
३. तीसरी थाली – जो सब क्षेत्रपालों के लिए है जिसे दोनों सन्यवारियों को भेंट करना है। (इस तीसरी थाली के भोग को तीन भागों में बांट करके रखिये)।

अब इन में पहली थाली को घर के सब व्यक्ति श्रद्धा पूर्वक हाथ से थामते रहिए और पूजक इस प्रकार नैवेद्य मन्त्र पढते जायें :- (बायें हाथ से घण्टा बजाते जाइये)



अमृतेश मुद्रा

अथ नैवेद्य मन्त्रः

अमृतेशमुद्रया, अमृतीकृत्य, अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवोऽनिश्वनोः बाहुभ्यां पुष्णो हस्ताभ्या मादधे। महागणपतये, कुमाराय, श्रियै, सरस्वत्यै लक्ष्म्यै, विश्वकर्मणे, द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलश देवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वर देवताभ्यः चातुर्वेश्वराय, सानुचराय, ऋतुपतये नारायणाय, फाल्गुणे' शक्ति सहिताय चक्रिणे क्रिया सहिताय गोविन्दाय, दुर्गायै, त्र्यम्बकाय वरुणाय, यज्ञपुरुषाय, अग्निष्वातादिभ्यः पितृगण देवतायः, कालरात्र्यै, तालरात्र्यै, राक्षिरात्र्यै, शिवरात्र्यै, तेजाय चण्डाय, समस्त शिवरात्री-देवताभ्यः भगवते वासुदेवाय गोविन्दाय सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय। भगवते भवादेवाय शर्वाय देवाय उमा सहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय, भगवते विनाथकाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय, वल्लभा-सहिताय श्री महागणेशाय, भगवते क्लींकां कुमाराय, षणमुखाय, सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय, प्रत्यक्षदेवाय, परमार्थसाराय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामाये चार्वङ्ग, श्री शारिका भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री महाराज्ञी भगवत्यै, श्री जवालाभगवत्यै, सिद्धलक्षम्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुर सुन्दर्यै,

सहस्त्रनाम्यै-देव्यै-भवान्यै, इह राष्ट्राधिपतयेअमुक भैरवाय, इन्द्राय वज्रहस्ताय, अग्नये शक्तितहस्ताय यमाय दण्ड हस्ताय नैऋृतये सङ्गहस्ताय, वरुणाय पाशहस्ताय, वायवे ध्वज़ हस्ताय, कुवेराय गदाहस्तायः ईशाणाय त्रिशूलहस्ताय, ब्रह्मणे-पद्म हस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय, अनन्तादिभ्यः, अष्टाभ्यः कुलनागदेवताम्यः। अग्न्यादि त्याभ्यां, वरुणचन्द्रमोभ्यां, कुमार भौमाभ्यां, विष्णुबुधाभ्यां, इन्द्रा-बृहस्पतिभ्यां, सरस्वती शुक्राभ्यां, प्रजापति शनैश्चराभ्यां, गणपति-राहुभ्यां, रुद्रकेतुभ्यां, ब्रह्मध्रुवाभ्यां, अनन्ता-गस्त्याभ्यां, ब्रह्मणे, कूर्माय, ध्रुवाय शिख्यादिभ्यः पञ्चं चत्वारिंशद् वास्तोष्यति देवताभ्यः, ब्रह्मदिभयो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्र गणेश देवताभ्यः राका देवताभ्यः, त्रिकादेवताभ्यः, सिनीवाली देवताभ्यः यामी देवताभ्यः, रौद्री देवताभ्यः, वारुणी देवताभ्यः, बार्हस्पत्य देवताभ्यः ॐभूः देवताभ्यः उों भुवः देवताभ्यः, उों स्वः देवताभ्यः उों भूभुर्वः स्वः देंवताभ्यः, अखण्ड-ब्रह्माण्ड-याग-देवताभ्यः, धूर्भ्यः, उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै, सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः।

उत्पन्नममृत दिव्यं प्राकृक्षीरोदधि मन्थानात्।
अन्नममृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ तत् सत् ब्रह्म अद्यातावत् तिथावद्य फाल्गुणमासस्य कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्यां - (दिन का नाम) वारान्वितायां श्री वटुकदेवता सन्तोषणार्थं अत्मनः शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री शिवरात्री व्रतनिमित्तं उों नैवेद्यं निवेदयामि नमः

(सब गृहजन थाली को थामना अब छोड दे)

अब पूजक दम्पति (पति-पत्नी) दोनों दूसरी थाली को दोनों हाथों से थामते हुए निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करे, और फिर योगिनियों को समर्पण करें (डुलू में छोडें)

ये विश्वभाविनो भूताः येच तेष्वनुयायिनः।

आहरन्तु बलिं तुष्टाः प्रयच्छन्तु शिवं मम।।

पूर्वे-ॐ ह्रीं श्रीं देवीपुत्र वटुक भैरवाय, कपिल जटाजूट भार भास्वराय, त्रिनेत्राय, जवालामुखाय, आग्नेये-भूज्ञ बलेभ्यः, दक्षिणे अग्नि वेताल राजाय, नैऋते-बहुखातक श्वराय, पश्चिमे-स्थान क्षेत्रपालाय, वायव्ये-मंगल राजाय उत्तरे-योगिनी बलेभ्यः, ईशाने विश्वक्सेनाय, ऊर्ध्वे-जयक्सेनाय, पाताले-तेजाय, मध्ये-चण्डाय कालरात्र्यै तालरात्र्यै, राज्ञिरात्र्यै, शिवरात्र्यै समस्तशिवरात्रि योगिनीभ्यः सुमन्ध्रि पुष्प-दीप-धुप नानाविध भक्ष्यभोज्य, अलिबलि पिशितादि बलिं समर्पयामि वौषिट्।

नोट : उपरोक्त मन्त्र पढ़ते पढ़ते योगिनयों को (डुलू से) सारा अन्न भैट करे, ओर अन्त में थाली में कुछ पानी भी डालिये, वह भी डुलू को भेंट करें ताकि थाली में कुछ शेष अन्न न रहे।

अब तीसरी थाली को सामने लाइये, इसके तीन भागों में प्रथम भाग को निम्न लिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित कर पक्षियों के समर्पण करे।

या काचित् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा।

खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवतु मे सदा।।

आकाश मातृभ्यो बलिं समर्पयामि नमः।

तिल और फूल इस पर लगाइये :

आकाश मातृभ्यो समालभनं गन्धो नमः अर्घोनमः पुष्प नमः

अन्य दोनों भागों को हाथ से थाम कर और यह मन्त्र पढ़ कर दोनों क्षेत्रपालों (सन्य वारियों) के समर्पण करें:

येऽस्मि निवसते क्षेत्रे क्षेत्रपालाः स किंकराः
तेभ्यो निवेदयाम्यद्य बलि पानीय संयुतम्
क्षां क्षेत्राधिपतिभ्यो बलि समर्पयामि नमः।
रां राष्ट्राधिपतिभ्यो बलि समर्पयामि नमः।

अन्त में दोनों में चावल मिश्रित जल इसी थाली से छोडते हुए पढिये।

सर्वे क्षेत्रपाला अभयवरप्रदा मह्यं पुष्टि पुष्टपतयो ददतु।।

इस प्रकार सब भैरवों को बलि से तृप्त करके पूजक फिर हाथ में दर्भ के दो काण्ड लेकर सब देवों का विसर्जन करे, और नैवेद्य को खाने की आज्ञा मांगे :-

(आवाहन की तरह विसर्जन भी करे)

ॐभूः पुरुषं विसर्ज़यामि नमः

ॐभूः पुरुषं विसर्ज़यामि नमः

ॐस्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐभूभुर्वः स्वः पुरुषं विसर्जयामि नमः

ॐभूभुर्वः स्वः तत्सवितु वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्।।३।।

ॐह्रीं श्रीं देवी पुत्राय विद्महे-क्षेत्रेश मुख्याय धीमहि तन्नो वटुक-भैरवः प्रचोदयात्

तत् सद् ब्रह्म अद्यातावत् तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्यां - वारान्वितायां महागण्पतये कुमारस्य श्रियः-सरस्वत्यः लक्ष्म्यः-ब्रह्माणः कलशदेवतानां ब्रह्म-विष्णु-महेश्वर देवतानां, कालरात्र्याः, तालरात्र्याः, राज्ञिरात्र्याः-शिवरात्र्याः, तेजस्य, चण्डस्य, समस्त शिवरात्री देवतानां, शिवरात्री व्रत निमितं कलश पूजनं क्षेत्रेश्वर-पूजनं शिवरात्री-पूजनं अच्छिद्रं सम्पूर्णमस्तु एवमस्तु।

अब थोड़ा सा जल निर्माल्य में डालते हुए पढ़िये:-

एताभ्यो देवताभ्यो यवोदकं नमः उदक तर्पण नमः।।

अब दोनों हाथों में फूल रख कर सब देवों से क्षमा प्रार्थना करते हुए श्रद्धा के फूल सब पर लगाते जाईये, और पढ़ते जाइये :-

१. आज्ञां मे दीयतां नाथं नैवेद्यस्यास्य भक्षणे।
शरीर यात्रा सिद्ध्यर्थं भगवत् क्षन्तु मर्हसि।।

२. आपन्नोस्मि शरणयोसि सर्वावस्थासु सर्वदा।
भगवन् त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणगतम्।।

३. क्षमध्वं ममक्षेत्रेशा ददध्वं सुख सम्पदः।
खगो पाताल दिक्संस्थाः तुष्टा यान्तु स्वकं पदम्।।

४. आवाहनं नैव जानामि नैव जानाभि पूजनम्।
पूजा भागं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।।

(सबको अष्टाग प्रणाम करें)

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः

अन्त में आगेलिखित मन्त्र से निर्माल्य में जल डाल कर सब गृहजनों का अवशेष जल से अभिषेक करें :

सहंनोऽवतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै
तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॐ शान्तिः ३।।

(सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः)

सबके अंत में पूजक कलश के विष्टऽर से कलश के जल की छीटें सब गृहजनों को देवे, और शगुन के रूप में कलश के फूल उनके हाथ में समर्पण करे, ओर यह पढते जाये।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव।
आयु-रारोग्य मैश्वर्य मेतत्त्रितयमस्तु ते।
जीवत्वं शरदः शतम्

(अन्त में सब मिल कर वटुकदेव से प्रार्थना करें)

१. पूजितोसि मया भक्त्या भगवन् गिरिजापतेः।
स गौरीको मम स्वानतं विश विंश्रान्ति हेतवे।।

२. आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणा शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिः स्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधि स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यतकर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

३. करचरण कृतं वाक् कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनंज वा मानसं वापराधम।
विदित मविदितं वा सर्व मेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।

४. मनस्यान्तर्मतं मन्त्रं मन्त्रस्यान्तर्गत मनः।
मनो मन्त्रमयं दिव्यमेक पुष्पं शिवार्चनम्।।

इति शिवरात्रि विधि :

नोट :- शिवरात्रि के दिन पूजक कलश में से सब जनों को केवल फूल ही देवें, अखरोट आदि नहीं, हां कुल रीति से तीसरे या चोथे दिन जब वटुक देव का विसर्जन करते हैं। (दुब दुब करते हैं)। उसी दिन पहले कलश के जल की छींटें सब को देवें, और उसी के अखरोटों का नैवेध करें, फिर अन्य पात्रों के अखरोटों का प्रसाद् बांटे।। (अपना बुजर्गो से इसका ज्ञान प्राप्त करें अथवा सतीसर परिवार से संर्पक करें)

अथ शिव चामर - स्तोत्रम

जय सर्व जन धोश जय गौरीपते शिव।
जय देव महादेव जय गङ्गाधरेश्वर।
जय दग्ध पुराध्यक्ष जय कांलांन्त करक
जय काम विरामेश जय भक्तानुकम्पक।।१।।
जय त्रैलोक्य संरक्षिन् जय निगुर्ण सद्गुण
जयानन्त गुणारम्भ जय घोर महेश्वर
जय चन्द्र कलाक्रान्त जय नागेन्द्र भूषण
जय पुङ्गव सत्केतो जय त्र्यक्ष महेश्वर ।।२।।
जयान्तक रिपो शम्भो जय ब्रह्मादि कारण
जय पञ्चकलातीत जय शूलिन कपालभृत्
जयोपेन्द्रेन्द्र चन्द्राद्य जय नन्दादि वन्दित
जयानेक गणाधीश जय स्वामिन् महेश्वर

जय विश्वाद्य विश्वेश जय विश्वैक कारण
जय विश्वसृजां मुख्य जय विश्वस्यं सदुरो।।
जय निरामय जय सुधामय जय धतामृत दोधिते
जय हतान्तक जय कृतानतक जय पुरान्तक सद्रते।

जय परापर जय दयापर जय नतार्पित सद्रते
जय जितस्मर जय महेश्वर जय जय त्रिजगत्पते।।

अथ क्षमापन - स्त्रोत्रम्

१. अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली-
कृताडन परिपीडन मरणागम समये।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निंवसन्
शिव शङ्कर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।।

२. अतिदुर्नय चटुलोन्द्रिय रिपु सञ्चय दलिते
पवि कर्कश कटु जल्पित खल-गर्हण चलिते।
शिवया सह ममचेतसि शशिशेखर निवसन्
शिव शङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम ।।

३. भवभञ्जन सुर-रञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन्।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिव शङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।।

४. शक्रशासन क्रतुशासन चतुराश्रम विषये
कलि विग्रह-भवदुग्रर्ह-रिपुदुर्बल समये।
द्विज क्षत्रिय वनिताशिशुदर कम्पित हृदये
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम्।।

५. भव संभव विविधामय परिपीडित वपुषं
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम्।
कुरु मां निज चरणार्चन निरतं भव सततम्
शिवशङ्कर शिवशङ्कर हर मे हर दुरितम।।

अथ प्रार्थना स्त्रोत्रम्

१. गौरीविलास भुवनाय महेश्वराय पंचाननाय शरणागत कल्पदाय।
शर्वाय सर्वजगता मधिपाय तस्मै दारिद्रदुःख दहनाय नमः शिवाय।।

२. विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय–ज्ञानप्रदायकरुणामृत सागाय।
कर्पूर कुन्द धवलेन्दुजटाधराय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय।।

३. गौरी प्रियाय निशिराजकलाधराय लोकान्तकाय भुजगाधिप कङ्कणाय।
गङ्गाधराय जलदानव मर्दनाय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय।।

४. भानुप्रियाय भवसागर नाशकाय कामान्तकाय कमलाप्रिय पूजिताय
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय।।

५. पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय स्वर्गपवर्गफलदाय विभूतिदाय
हैमांशुकाय भुवनत्रयवन्दिताय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः। शिवाय।।

६. भक्ति प्रियाय भवरोग भयापहाय दिव्याय दिव्य वसनाय गुणार्णवाय
तेज़ोमयाय सकलार्थद संस्थिताय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः
शिवाय।।

७. रामप्रियाय रघुनाथ वरप्रदाय नाथप्रियाय नगराज सुताप्रियाय
पुण्याय पुण्य चरिताय सुरार्चिताय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः
शिवाय

८. चर्माम्बराय चितिभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुणडल मण्डिताय
मञ्जी पाद युगलाय वृषध्वजाय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः
शिवाय

६. मुक्ताय यज्ञ फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्रयदुःख दहनाय नमः शिवाय।

इत्येपा वाङ्गमयी पूजा श्रीमत् शङ्करपादयोः।

अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।

तव तत्वं नजानामि कीदृशोसि महेश्वर।

यादृशोसि महादेव तादृशाय नमोनमः।।

श्री शिवः प्रीयताम्

अथ वैश्वदेव विधिः

(अग्निं प्रज्वाल्य) सर्व प्रथम अग्नि को प्रज्वलित करे, फिर उसके 'इशान कोण' याने अग्नि के सामने उसके साथ ही अपनी दाई ओर प्रणीत पात्र (अथवा) कोई छोटा पात्र रखे उसमें जल, दर्भ का विष्टऽर चावल ओर फूल ड़ाले, अब हाथ में थोड़े से तिल रखकर उन्हें अग्नि और इसी पात्र में ड़ालते हुए पढते रहिए :-

पात्रं तिलाक्षतै मिश्रं कुसुमोदक विष्टरैः।
अग्नोश्चैशान् दिग्भागे प्रणीत मभिधीयते।
प्रणीतं नैऋते स्थाप्य स विष्णुः नात्र संशयः।।

अब नीचे के तीन मन्त्रों से इसी में तीन बार फूल डालिये,

१. 'संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः
२. सं सृष्टा सन्तुवः वः स्तन्वः प्राणो अस्तु नः
३. सं य्यावः प्रिया स्तन्धः संप्रिया हृदयानि वः
आत्मा वो अस्तु सप्रियाः संप्रिया स्तन्वो मम।।

इस शुभ कार्य में कोई बाधा न आवे, उसके निवारण के लिए प्रज्वलित अग्नि में से दर्भ के दो काण्ड जलाकर अपनी दाई-तरफ फेंकते हुए यह पढते रहिए।

निर्दग्धं रक्षो निदग्धाराति रपाग्ने। अग्नि मामादं जहि निष्क्रव्यादं सीधा देव यजनं वह। प्राणायामं कुर्यात ।।

(अब प्राणायाम करें)

फिर इसी पात्र के जल से इसी के विष्टर द्वारा प्रज्चलित अग्नि को नौ बार छिडके देते हुए पढ़िये :-

१. ऋृतं त्वा सत्येन परिसमूह्यामि
२. सत्यं त्वर्तेन परिसमूह्यामि
३. ऋृत सत्याभ्यां त्वा परिसमूह्यामि
४. ऋृतं त्वा सत्येन पर्युक्षामि
५. सत्यं त्वर्तेन पर्युक्षामि
६. ऋृतं सत्याभ्यां त्वा पर्युक्षामि
७. ऋृतं त्वा सत्येन परिषिञ्चामि
८. सत्यं त्वर्तेन परिषिञ्चामि
९. ऋृत सत्याभ्यां त्वा परिषिञ्चामि

अब इसी अग्नि के चारों ओर दर्भ के ४ काण्ड फेंकते हुए पढ़िये:

यज्ञस्यसन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै स्तृणामि।
पुरस्तात्, दक्षिणतः उत्तरतः, पश्चात् इति स्तरैः।

प्रज्वलित अग्नि को अब पूर्ण भक्ति से तिलक और पुष्प डालते हुए पढिये :

ज्वालामण्डितामाकाशं साक्षमालाकमण्डलुम्
त्रिनेत्रं पञ्चवक्रं च होमकाले तु चिन्तयेत्।
शुकपृष्टगतं देवं शक्तिहस्तं चतुर्भुजम्।
मृगाजिनेन सन्नद्धं पुष्पवर्ण हुताशनम्।।
अग्नये शुकारूढाय स्वाहा सहिताय पावकाय त्रिनेत्राय
तेजोरूपायसमालभनं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पंनमः।

इस प्रकार अग्निदेव की पूजा करके, अब वैश्वदेव के लिए चाहे चावल हो या रोटियां, लाईये, उन्हे घृतधारा से सिञ्चित

करें फिर अग्नि में जलाये दो दर्भ कांडे से इसे अभिमन्त्रित करें और पढियें :-

वैश्वदेवस्य सिद्धस्य सर्वतोऽग्रस्य अन्नस्य जुहोति पाकस्य धृतेन संलिप्य स्वस्त्यस्तु श्रृतमाभिघार्य।

अब इसके छोटे छोटे टुकड़े या लुकमे उठाकर, पहला लुकमा अग्नि में उत्तर की ओर 'अग्नये स्वाहा' पढकर डालिये, ओर दूसरा दक्षिण की ओर 'सोमाय स्वाहा' कहकर ड़ालिए, अन्य सब अग्नि के मध्य में आहुति देते हुए पढ़िये :-

मित्राय स्वाहा, वरुणाय स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राग्भ्यिां°, विश्वेभ्यो-देवेब्यः°, प्रजापतये°, अनुमत्यै°, धान्नतरये°, वास्तोष्पतये°, वासुदेवाय°, सङ्कर्पणाय°, प्रद्युम्नाय°, अनिरुद्धाय°, सत्याय°, पुरुषाय°, अच्युताय°, माधवाय°, गोविन्दाय°, गोपालाय स्वाहा, सहस्त्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मी सहिताय नारायणाय स्वाहा।।

अब इन में से कुछ टुकडे हाथ में रखे हाथ में रखे, और-

"सावित्राणि, सावित्रस्य, देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां मादधे, वैश्वदेव पूर्वकं नित्यकर्म याग देवताभ्यो नमो नैवेद्य निवेदयामि नमः" पढकर इसे नैवेद्य के साथ रखिए।

(अब भूतगणों को तृप्त करना है, इसे अन्नकण करते है इसके लिए अग्नि के पास ही अपने दाई ओर दर्भ के कुछ तिनके, जिनका सिरा पूर्व दिशा की ओर हो, भूमि पर बिछावे, इन्ही पर रोटियों के ढुकडे या चावल के लुकमें, दाये से बायें, फिर बायें से दायें नीचे से प्रारम्भ कर उपर सिरे तक पंक्ति में तीन लुकमें रखते जाइये) यहां तक 36 लुकमें बन पड़े। (मन्त्र पढते जाइये)

[1]तक्षाय नमः,[2]उप तक्षाय नमः, [3]अम्बा नामासि नमस्ते, [4]दुला नामासि नमस्ते, [5]नितन्त्री नामासि नमस्ते, [6]चुपनीका नामासि नमस्ते, [7]अभ्रयन्ती नामासि नमस्ते, [8]मेघयन्ती नामासि नमस्ते, [9]वर्षन्ती नामासि नमस्ते, [10]नन्दनि नमस्ते, [11]सुभगे नमस्ते, [12]सुमङ्गि ल नमस्ते, [13]भद्रङ्करि नमस्ते, [14]श्रियै हिरणय केश्यै नमः, [15]वनस्पतिभ्यो नमः, [16]धर्माय नमः, [17]अधर्माय नमः, [18]मृत्यवे नमः, [19]मरुद्भ्यो नमः, [20]वरुणाय नमः, [21]विष्णवे नमः, [22]वैश्रवणायराज्ञे नमः, [23]भूतेभ्यो नमः, [24]इन्द्राय नमः, [25]इन्द्र पुरूषेभ्यो नमाः [26]सोमाय नमः [27]सोम पुरुषेभ्यो नमः, [28]वरुणाय नमः, [29]वरुण पुरुषेभ्यो नमः, [30]ब्रह्मणे नमः, [31]ब्रह्म पुरुषेभ्यो नमः, (ऊर्ध्वं) [32]आकाशाय नमः, [33](स्थाणिडले) दिवा चरेभ्यो भूतेम्यो नमः, [34]नक्तञ्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः, [35]तक्षादिभ्यः षटत्रिशद् देवताभ्यो अन्नं नमः

(सब पर थोडा सा जल छिडकाते हुए पढिये)

[36]तक्षादिभ्यः षट् त्रिंशद् देवताभ्यः आचमनीयं नमः)

इस प्रकार भूमण्डल में वर्तमान सब भूतगणों को अपना अपना भाग देकर अब सब पितर वर्ग को भी तृप्त करना यथेष्ट है, उसके लिए सर्व प्रथम 'अप सव्येन' बाऐ बाजूं में यज्ञोपवीत धारण करे, फिर अन्नकणों के नीचे अपने दाई ओर दर्भ के कुछ तिनके, जिनका सिरा दक्षिण की ओर हो, भूमि पर बिछावे, उनपर तिल मिश्रित जल (तिलोदकेन अवने जनं स्वधा) कहकर छिडकावे, तदनन्तर दूध दही, तिल, पानी, शहद और घी से परिप्लुत अन्न (चावल हो या रोटियां) तैयार करें, दीप और धूप जलता रहे (इसे अष्टाङ्ग अन्न कहते है) (वाम जानुं भूमौ निधाय) अपने बाये घुटने को जमीन पर रखकर इसी अष्टाङ्ग अन्न में से थोडा सा लुकमा उठाकर...

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वधा च स्वाहा च नित्यमेव भवन्त्विह।।

मन्त्र पढे, तदनन्तर तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत्तिथावद्य फाल्गुण मासस्य कृष्ण पक्षस्य तिथौ (द्वादश्यां वा त्रयोदशां) (दिन का नाम लेकर) वासरान्वितायां पितः (गोत्र के समेत पिता जी का नाम लेकर)

"एतत्तेऽन्नं येच त्वाऽनु" दर्भ पर यह लुकमा रखिये।
पितामह (दादे का नाम लेकर)
एतत्तेऽन्नं येचत्वाऽनु पढ़कर पिता के लुकमे के साथ ही रखे।
प्रपितामह (पर दादे का नाम लेकर) एतत्तेऽन्नं येचत्वाऽनु पढ़कर दादे के साथ रखे (इस प्रकार तीन की एक पंक्ति हो गई)
अब इसी प्रकार तीन तीन की पंक्ति बनाते जाइये :
मातः (माता जी का नाम लेकर) एतत्तेऽनं याश्चत्वाऽनु (दूसरी पंक्ति में रखे)
पितामहि (दादी का नाम लेकर) एतत्तेऽनं याश्चत्वाऽनु (दूसरी नं० में रखे)
प्रपितामहि (परदादी का नाम) एतत्तेऽनं याश्चत्वाऽनु (तीसरे नं० में रखे)
मातामह (नाने का नाम लेकर) एतत्तेऽन्नं येचतवाऽनु (तीसरी पंक्ति में)
प्रभातामह (परनाने का नाम) एतत्तेऽन्नं येचतवाऽनु (दूसरे नं० पर)
वृद्ध प्रमातामह (परपडनाने का) एतत्तेऽन्नं येचतवाऽनु (तीसरे पंक्ति में)
मातामहि (नानी का नाम लेकर) एतत्तेऽन्नं याश्चतवाऽनु (चोथी पंक्ति में)
प्रमातामहि (परनानी का नाम लेकर) एतत्तेऽन्नं याश्चतवाऽनु (दूसरे नं० पर)
वृद्ध प्रमातामहि (परपड़नानी का) एतत्तेऽन्नं याश्चतवाऽनु (तीसरे पंक्ति पर)

इस प्रकार अन्य सम्बन्धियों को भी नाम और गोत्र लेकर अष्टाङ्ग अन्न से संतृप्त करे। अन्त में :-
समस्त मातापितृभ्यो द्वादश दैवतेभ्यः पितृभ्यः अन्नं स्वधा २ पढ़कर बाकी अन्न भी छोड़े और हाथ धोले। फिर अंगूठे से

सब पर "समस्त मातृ पितृभ्यः समालभनं गन्ध स्वधा" पढकर तिलक लगाये।

"अर्घ्यःस्वधा, पुष्पं स्वधा" पढ़कर फूल लगावे, 'दीपःस्वधाः धूप-स्वधा' पढकर थोड़ा जल छोडे। 'भक्ष्य भोज्य-फल मूल बलि नैवेद्यमाहारादि अन्न स्वधा' कहकर फलमूल आदि रोटियां उन्हें अर्पण करें, फिर तिल और शहद मिलाकर पानी से 'तिलमधुमिश्रमुदकपात्र माचमनीयं जलं स्वधा' कहकर सब पर आचमन का जल डालें। अन्त में दूध, दही शहद चावल ओर तिल मिलाकर जल से सबका तर्पण करते पढे समस्त माता पितृभ्यः हिमपानं स्वधा, क्षीर पानं स्वधा मधुपानं स्वधा तिलोदकं स्वधा, उदकतर्पण स्वधा हिमं-२ रजतम्-२ फिर (सव्येन) दायें बाजू में यज्ञोपवीत धारण कर (३ ऋृतुओं के नाम लेकर) वसन्ताय नमः, ग्रीष्माय नमः, वर्षाभ्यो नमः, शरदे नमः, हेमन्ताय नमः, हेमन्ताय नमः, शिशिराय नमः, षड्ऋृतुभ्यो नमः और तर्पण करे। फिर रोटी का एक टुकडा अग्नि में 'अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' कहकर अग्नि में ड़ालिये, हाथ धोले और फिर प्राणायाम करें।

अन्त में अग्नि को विसर्जन-निमित्त प्रणीत पात्र में से पहले की तरह तीन बार विष्टऽर से जल छिड़कते पढ़िये।

१. ऋृतंत्वा सत्येन विमुञ्चामि २. सत्यं त्वर्तेन विमुञ्चामि
३. ऋृत सत्याभ्यां त्वा विमुञ्चामि।

साथ ही अग्नि के चारों ओर छोड़े दर्भ के चार तिनके वापिस अग्नि में डाले

यज्ञस्य सन्ततिरसि यज्ञस्य त्वा सन्तत्यै नयामि

कहकर ड़ाले। और हाथ जोड़कर अग्नि से आर्शीवाद मांगते हुए पढ़िये :

धर्म देहि धनं देहि पुत्र पौत्राश्च देहि मे।
आयु रारोग्यमैश्वर्यं देहि मे हव्य वाहन।।
भक्तिं देहि श्रियं सुखं देहि स्वतन्त्रताम्।
देहि भोगं च मोक्षं च मनोभिलपितं तथा।।
यत्र देवालये सर्वे तत्र गच्छ हुताशन।।

अन्त में
"तेजोसि – तेजो मयि देहि"
कहकर अग्नि की ज्योति दोनों हाथों से
अपने में समा लीजिये।

इति वैश्वदेव विधिः



ध्यान रहे हमारी यह पूजा पद्धति लाखों
साल पुरानी और गूढ है
शिवमय होने के ऐसे अवसर बार–बार नहीं
आते
SATISAR PARIVAR

APPEAL

We the Kashmiri Pandits, inheritors of a rich cultural Heritage are proud of our traditions, festival structure, art & culture. We should always remain greatful to our ancestors, who despite of deep religious persecution, suppression and onslaught kept this rich flame of our culture alive. We can't forget the great sacrifices made by them for the preservation and upholding this heritage (history is a witness to it) Even after getting reduced to eleven (11) families they followed this way of life. Our past makes us to believe that we are great, our culture is great, our traditions are great that is why we are still alive.

No doubt we are passing through the most difficult phase of our survival yet we can neither be complicent nor should we compromise on the dilution of our identity. Because a man without an identity is better dead than alive.

The greatest help or service that we can do to our community is imparting the knowledge of God. Spiritual help is the highest help we can render to any one. The root cause of human suffering is Avidya or ignorance. If we can remove this ignorance in us, then only we can be eternally happy; then only we can realise that we are (भट्ट) (Pandit/Learned ones) and then only will all kinds of miseries, tribulations and evils be completely eradicated.

शय आसअस त् शय छय
लल बो पानय पानस छस
नीरिथ गच्छान तीलिथ यिवान
लल बो पानय दयी छय

Let us keep this rich cultural heritage alive. Let all of us be more cautious than ever before because now the challenges are different and difficult.

SATISAR is an effort in this direction, let us all join hands to face this challenge.

We need your intellectual, moral, physical and financial support in promotion and propogation of this thought.

Please send us your views/suggestions so that we can be more scientific in our approach.

We need you in the service of community.

SATISAR FOUNDATION
170, LANE-3, PRIYA DARSHANI LANETALAB TILLO,
JAMMU - 180 002. PH : 0191-2502839
e-mail : satisar2000@YAHOO.COM
visit us at - www.satisar.org.



कृप्या करके इस कूपन को भर कर हमारे पते पर भेजें

'सतीसर' के विषय में आपके सुझाव / विचारः

____

____

____

____

____

____

नाम : ____

____

पता : ____

____

____

BE IT OUR SOCIAL CODE OF CONDUCT IN EXILE

LET this Shivratri bring in us a renewed resolve to strengthen our social order that would help us in preserving and promoting our age-old values, culture, tradition and our unique identity. Let we all Kashmiri Pandits, spread far and wide, dispersed and in Exile, identify a small code that would see us emerge stronger, cohesive, vibrant and true followers of the unique tradition that has been passed onto us from our ancestors. So let be it our social code of conduct IN EXILE.

1. Preserve and promote our language :
   - By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn, speak and interact in Kashmiri.
   - By interacting and speaking with our fellow community brethren in Kashmiri.
2. Protect our identity :
   - By imbibing a sense of pride in our unique social, cultural and spiritual tradition.
   - By maintaining our age-old social marital order and promoting and encouraging marriages within the fold.
3. Uphold our traditions :
   - By following the indigenous scientific lunar calendar in observing rituals, festivals, special occasions etc.
   - By celebrating birthday's, rituals, religious occasions and unique Kashmiri Pandit festivals.
4. Strengthen our brotherhood :
   - By expanding our social circle and
   - By caring for each other: Mutual care is the only ray of hope for our SURVIVAL IN EXILE.
5. Strengthen Socio-Cultural institutions :
   - Physically, intellectually and financially, as these are pillars of our identity.

SATISAR FOUNDATION

170, LANE-3, PRIYA DARSHANI LANE
TALAB TILLO, JAMMU - 180 002. PH : 0191-2502839



e-mail : satisar2000@YAHOO.COM
visit us at - www.satisar.org.

ANGAD # Ph. : 2574004, 2544483